जयप्रकाश नारायण के सामाजिक विचार

डॉ0 आरती कुमारी*

जयप्रकाश नारायण नाजनीतिक क्षितिज पर एक जाज्जवल्यमान ऐसे नक्षत्र हैं जिन्होंने भारतीय राजनीति को एक नई दिशा और एक दिशाहीन पग–पग पर अपमानित, लांक्षित, उपेक्षित लोगों को एक आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा दी है। साम्यवाद से प्रभावित होकर पुनः समाजवाद की ओर उत्प्रेरित होना उनके जीवन यात्रा का एक बदलता कदम है। राजनीति से सन्यास लेकर सर्वोदय के सिद्धान्तों को आत्मसात कर भूटान और ग्रामदान जैसे हृदय परिवर्तन करने वाले आंदोलन में उनका सम्मिलित होना उनके उदारमना एवं उच्चे आध्यात्मिक होना परिचायक है। सर्वोदय से सम्पूर्ण क्रांति तक की जीवन–यात्रा उनके व्यक्तित्व के उठते उभरते, ढहते–मिटते अनेक सिद्धांतों की कहानी है।

जयप्रकाश नारायण संघर्षशील राजनीति और सैद्धान्तिक राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र के महान बुद्धिजीवी और मौलिक विचारक रहे हैं। इस पूरी शताब्दी को मार्क्स और गॉधी के चिंतन ने विशेष रूप से प्रभावित किया। जयप्रकाश इन दोनों शक्तियों से प्रेरित एक तीसरी धारा को प्रवाहित करते है। उनका चिंतन समाजवाद का समर्पित था लेकिन उनका समाजवादी चिंतन देश काल की सीमा में कभी बंदी नहीं हुआ। विश्व की रचना और विकास के बारे में उनका दृष्टिकोण मौलिक और अद्वितीय था। वह विश्व नागरिकता का स्वप्न देखकर भारत के राष्ट्रीय प्रश्नों के उत्तर खोजा करते थे। वह नई सभ्यता और संस्कृति के स्वप्न दृष्टा थे। उन्होंने पूँजीवादी और साम्यवाद को एकरंगी बताकर उनका विरोध किया। उन्होंने समाजवाद को एक सर्वोतम विचार के रूप में स्वीकार किया, वह समाजवाद की सफलता के लिए प्रजातंत्र को आवश्यक पूर्ति के रूप में स्वीकार करते हैं।

जयप्रकाश नारायण विद्रोही गीतों के साधक और गायक थे। उन्होंने अन्यायों को मौन रहकर स्वीकार नहीं किया, बल्कि अन्याय के प्रति उन्होंने सदैव संघर्ष किया। आधुनिकरण की उनकी प्रवृत्ति नहीं थी। वह स्वंय एक इतिहास बनकर चले थे। भारत की सत्ताधारी शक्तियों के विरूद्ध उन्होंने संघर्ष करके अपनी कम समार्थ्य का समुचित परिचय दिया। उन्होंने पद दलितों तथा समाज के शोषित

***सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग भूपेश गुप्त महाविद्यालय भभुआ (कैमूर)**

वर्ग के लोगों को शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए एक विद्रोह के स्वर के आकाश में गुँजा दिया।

जयप्रकाश नारायण के अनुसार ''हमारे देश में क्रांति के मार्ग में जनविरोधी सरकार तो एक बहुत बड़ी रूकावट नहीं है ही, स्वंय समाज कम रूकावट नहीं है। वर्णो, सम्प्रदायों, जातियों में बॅटे हुएए समाज के कारण हमारे अंदर ऐसे गलत मूल्य, संस्कार और अंधविश्वास हो गए हैं कि उनका न्याय और समता की जीवन पद्धति से मेल नहीं बैठता।'' इसलिए जे0पी0 यह मानते थे कि ''समाज की बुराई, छुआछूत, जात–पात के झगड़े, साम्प्रदायिक झगड़े सब समाप्त होने चाहिए। हम सब हिन्दुस्तानी है, हम इंसान हैं, यह विचार फैलाना चाहिए।

बिहार आंदोलन के दौरान जे0पी0 ने युवाओं से सामाजिक कुरूतियों–छुआछूत, तिलक, दहेज, जातिभेद आदि के विरूद्ध संघर्ष करने का आहवान किया था। जाति–व्यवस्था को मिटाने के लिए जे0पी0 ने अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन देने की बात कही थी। उन्होंने अविवाहित युवाओं से अपील की थी कि वे अपने माता–पिता को समझाकर अन्तराजातीय के लिए राजी करें और अगर वें ''राजी नहीं होते हैं तो उनकी नाराजगी भी उठाकर, उनका सामना करके, दूसरी जातियों में अपना विवाह करें। यहॉ तक कि जनेऊ को उच्च जाति का प्रतीक मानकर जे0पी0 ने जनेऊ तोड़ने का आहवान भी किया था।

इमरजेन्सी में जेल से रिहा होने के बाद लिखे गए ''बिहारवासियों के नाम चिट्ठी में जे0पी0 कहते है– आज भी हरिजनों के साथ सवर्णो का दुर्व्यहार होता है और उन्हें अस्पृथ्य समझकर अलग रखा जाता है। इतना ही नहीं उसके प्रति सवर्णो का आक्रोश कभी–कभी भयानक रूप ले लेता है। हरिजनों को जीवित जला देने की अनेक घटनाऍ हुए है और होती रहती है। सम्पूर्ण क्रांति के सिपाहियों को इस विस्फोटक परिस्थिथ्य का रचनात्मक हल ढूढ़ंना होगा। इसके लिए उन्हें हरिजन और आदिवासी जनता के जीवन में प्रवेश करना होगा यह एक रचनात्मक सेवा है जिसके बिना सम्पूर्ण क्रांति अधूरी रह जाएगी।

इसी तरह, जे0पी0 ने युवाओं से दहेज की व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह करने का भी आह्वान किया था। इसके अलावा, जे0पी0 ने स्त्री–पुरूष समता को भी सम्पूर्ण क्रांति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना था। उनके अनुसार ''शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में पुरूषों और महिलाओं में कोई फर्क नहीं होना चाहिए हर तरह से महिलाओं को समानता का व्यवहार मिलना चाहिए। सम्पूर्ण क्रांति का यह अभिन्न हिस्सा है।

राजनीतिक व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन का जे0पी0 सम्पूर्ण क्रांति का अभिन्न अंग मानते थे। राजनीतिक क्रांति के अन्तर्गत जे0पी0 ने लोकतंत्र को

अत्यधिक महत्व दिया है। तानाशाही का विरोधा करते हुए वे कहते है : तानाशाही में पहली बात तो यह होती है कि मानव की मानवता खत्म हो जाती है, मानव पशु हो जाता है। उसको यह भी अधिकार नहीं होता तानाशाही में, कि वह अपनी बात आजादी के साथ से कह सके। पशु में और मनुष्य में एक बड़ा अन्तर यह है कि पशु की भाषा नहीं होती, मनुष्य की बोली है। यह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है कि जो हम ठीक समझें, बोलें, करें, हिम्मत के साथ कहें। लेकिन तानाशाही में यह अधिकार हमसे छिन जाता है। इस माने में हम पशु के बराबर हो जाते है।

जे0पी0 लोकतंत्र और मौलिक नागरिक स्वतंत्रताओं के पक्षधर तो थे ही लेकिन वे वर्तमान औपचारिक लोकतंत्र से संतुष्ट नहीं थे जिसमें नागरिकों की भूमिका पॉच वर्ष में एक बार वोट डालने तक ही सीमित रहती है। वे जनता की व्यापकतम हिस्सेदारी वाले विकेन्द्रित लोकतंत्र के समर्थक थे।

जे0पी0 अनुसार आज के भारतीय लोकतंत्र में सबसे बड़ा दोष यह है कि न तो अपने प्रतिनिधि के लिए उम्मीदवारों के चयन में जनता का हाथ रहता है, और न चुनाव के बाद अपने प्रतिनिधियों पर उनका कोई अंकुश रहता है। विकसित लोकतांत्रिक देशों में जनमत का, स्वतंत्र एवं साहसी प्रेस का और शिक्षित समुदाय का जो वैचारिक और नैतिक असर होता है, उसका भी हमारे देश में अभाव है। इसलिए जे0पी0 असंगठित लोकशक्ति को जागृत और संगठित करने पर बल देते थे ताकि राज्य शक्ति पर जागृत और संगठित करने पर बल देते थे ताकि राज्य शक्ति पर लोकशक्ति का अंकुश स्थापित हो। ''कारावास की कहानी में जे0पी0 कहते हैं–मैं लोकतंत्र के क्षितिज को विस्तृत करने की कोशिश कर रहा था और यह मुख्यतः जनता को लोकतंत्र की प्रक्रियाओं में अधिक गहनता और सातत्यपूर्वक शामिल करने की कोशिश थी। इसके दो रूप थे। एक तो यह कि ऐसे संगठन का निर्माण किया जाए जिसके जरिए उम्मीदवारों के चयन में जनता की राय किसी हद तक ली जा सके। दूसरा यह कि एक ऐसा संगठन खड़ा हो यद्यपि उपर बताए गए संगठन से भी यह काम हो सकता है– जिसके सहाने जनता अपने प्रतिनिधियों पर नजर रख सके और उनसे उत्तम एवं स्वच्छ आचरण की मॉग कर सके। ये ही दो तत्व थे जो मैं बिहार आंदोलन के सारे शोर शराबे से निकालना चाहता था।

इसके अलावा, लोकतंत्र को वास्तविक बनाने की दृष्टि से जे0पी0 चुनाव पद्धति में ऐसे बुनियादी परिवर्तत लाना चाहते थे, जिससे, चुनाव को स्वतंत्र, निष्पक्ष, अधिक प्रतिनिधिक और काम खर्चीला बनाया जा सके ताकि गरीब उम्मीदवारी भी चुनाव में खड़ा हो सके। जे0पी0 यह मानते थे कि सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार के भूल में राजनीतिक इसलिए भी वे धनशक्ति के प्रभाव को समाप्त करने के लिए

चुनाव–प्रणाली में सुधार में पक्षधर थे। इसीतरह, राज्यशक्ति पर शोकशक्ति का अंकुश स्थापित करने के लिए जे0पी0 प्रतिनिधि वापसी के अधिकार का भी समर्थन करते थे। उनकी यह मान्यता थी कि अगर कोई निर्वाचित प्रतिनिधि भ्रष्ट हो गया हो, निकम्मा साबित हुआ हो या चुनाव के समय किए गए वायदों को पूरा करने में असतर्थ रहा हो, तो पॉच वर्ष के कार्यकाल के पूरा होने से पहले ही जनता को उसे वापस बुलाने का अधिकार भी है।

गॉधीनिष्ठ सामुदायिक लोकतंत्र को एक दूरगामी लक्ष्य मानते हुए जे0पी0 ने राजनीतिक क्षेत्र में क्रांति के लिए तत्काल इन्हीं उपर दिये गए परिवर्तनां की हिमादयत की थी। 1959 में प्रकाशित अपने निबन्ध ''भारतीय राज्य व्यवस्था का पुननिर्माण'' और 1961 में प्रकाशित ''लोक–स्वराज्य'' में जे0पी0 ने जनता की व्यापकतम हिस्सेदारी वाले सामुदायिक, दलविहीन लोकतंत्र की वकालत की थी। लेकिन 1974 के बिहार आंदोलन के दौरान जे0पी0 ने स्पष्ट रूप से कहा था कि दलविहीन लोकतंत्र की स्थापना आंदोलन का तात्कालिन उद्देश्य हरगिज नहीं है– यह एक अतिदूरगामी उद्देश्य है, जिसे एक वर्गविहीन और जातिविहीन समाज में ही प्राप्त किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. जय प्रकाश नारायण (सं0 रमेन्द्र) जय प्रकाश विचार संकलन (पटना राजेन्द्र प्रकाशन 1966 पृ0 9)
2. जय प्रकाश नारायण (सं0 रमेन्द्र) जय प्रकाश विचार संकलन (पटना राजेन्द्र प्रकाशन 1966 पृ0 9)
3. जय प्रकाश नारायण मेरी विचार यात्रा– भाग 02
4. जय प्रकाश नारायण जय प्रकाश विचार संकलन, पृ0– 10
5. जय प्रकाश नारायण जय प्रकाश विचार संकलन, पृ0– 14
6. जय प्रकाश नारायण जय प्रकाश विचार संकलन, पृ0– 24
7. जय प्रकाश नारायण कारावास की कहानी– पृ0– 01

****